**कक्षा – दस**

**Hindi**

**तुलसीदास**

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| **क्रम स .** | **मुख्य बिन्दु** | **व्याखा** |
| 1 | रामचरित मानस के बालकांड से लिया है । | सीता स्वयंवर मे राम द्वारा शिव धनुष भंग के बाद मुनि परशु राम को जब यह समाचार मिला तो वे क्रोधित होकर वहा आते है ।  शिव धनुष को खंडित देखकर वे आपे से बाहर हो जाते है ।  राम के विनय ओर विश्वामित्र के समझाने पर तथा राम की शक्ति की परीक्षा लेकर अंतत उनका गुस्सा शांत होता है।  इस बीच राम ,लक्ष्मण ओर परशु राम के क्रोध भरे व्यंग वचनो से देते हे । इस प्रसंग की विशेषता हे लक्ष्मण की वीर रस से पमी व्यंग्योंक्तिया ओर व्यजना शैली की सरस अभिव्यक्ति । |

**गिरिजाकुमार माथुर**

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| **क्रम स .** | **मुख्य बिन्दु** | **व्याखा** |
| 1 | छाया मत छूना कविता के माध्यम से कवि यह कहना चाहता हे कि जीवन मे सुख ओर दुख दोनों ही उपस्थ्ति है । | विगत सुखो को याद कर वर्तमान के दुख को गहरा करना तर्क संगत नही है । कवि के शब्दो मे इससे दुख दुना होता है । विगत की सुखद काल्पनिकता से चिपके रहकर वर्तमान से पलायन की अपेक्षा कठिन यथार्थ से अपेक्षा रूबरू होना ही जीवन की प्राथमिकता होनी चाहिए । |
| 2 | कविता अतीत की स्मृतियो को भूल वर्तमान का सामना कर भविष्य का वरण करने का संदेश देती । | वह यह बताती हे कि जीवन के सत्य को छोड़कर उसकी छायाओ से भ्रमित रहना जीवन कि कठोर वास्तविकता से दूर रहना है । |

ऋतुराज

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| **क्रम स .** | **मुख्य बिन्दु** | **व्याखा** |
| 1 | कन्याकर दान कविता मे माँ बाप को स्त्री के परंपरागत (आदर्श ) रूप से हट सीख दे रही है । | कवि का मानना है कि समाज व्यवस्था द्वारा स्त्रियों के लिए आचरण संबंधी जो प्रतिमान गढ़ लिए जाते है वे आदर्श के मुलम्मे मे बंधने होते है । |
| 2 | कोमलता के गौरव मे कमजोरी का उफस छिपा रहता है । | लड़की जैसा न दिखाई देने मे इसी आदर्शीकरण का प्रतीकार है । |
| 3. | बेटी माँ के सबसे निकट ओर सुख दुख का साथी है । | इसी कारण इसे अंतिमपूँजी कहा गया है। कविता मे केवल भावुकता ही नही बल्कि माँ के संचित अनुभवों की पीड़ा की प्रमाणिक अभिव्यक्ति है । इस छोटी सी कविता मे स्त्री जीवन के प्रति ऋतुराज जी की गहरी स्वेदनशीलता अभिवयक्ति हुई है । |

मंगलेश डबराल संगतकार

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| **क्रम स .** | **मुख्य बिन्दु** | **व्याखा** |
| 1 | संगतकार कविता मे गायन मे मुख्य गायक का साथ देने वाले संगतकार की भूमिका के महत्व पर विचार करती है । | द्र्श्य माध्यम की प्रस्तुतियो जैसे – नाटक , फिल्म, संगीत न्रत्य के बारे मे तो यह सही है ही, हम समाज ओर इतिहास मे भी ऐसे अनेक प्रसंगो को देख सकते है । जहाँ नायक की सफलता मे अनेक लोगो ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।  कविता हममे यह संवेदनशीलता विकसित करती है कि उनमे से प्रत्येक का अपना अपना महत्व है ओर उनका सामने न आना उनकी कमजोरी नही मानवीयता है ।  संगीत की सूक्ष्म समझ ओर कविता की द्र्श्यात्मक्ता इस कविता को ऐसी गीत देती है मानो हम इसे अपने सामने घटित होता देख रहे हो । |

मन्नू भण्डारी

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| **क्रम स .** | **मुख्य बिन्दु** | **व्याखा** |
| 1 | एक कहानी यह भी के संदर्भ मे सबसे पहले तो हम यह जान ले कि मन्नू भण्डारी ने पारिश्रमिक अर्थ मे कोई सिलसिलेवार आत्मकथा नही लिखी है । | अपने आत्म कथ्य मे उन्होने उन व्यक्तियों ओर घटनाओ के बारे मे लिखा है जो उनके लेखकीय जीवन से जुड़े हुए है। |
| 2. | मन्नू जी के किशोर जीवन से जुड़ी घटनाओ के साथ उनके पिताजी ओर उनकी कॉलेज कि प्राध्यापिका शीला अग्रवाल का व्यक्तित्व विशेष तोर पर उभरकर आया है । | जिन्होने आगे चलकर उनके लेखकिय व्यक्तित्व के उनके निर्माण मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । लेखिका ने यहा बहुत ही खूबसूरती से साधारण लड़को के असाधारण बनने के प्रारम्भिक पड़ावों को प्रकट किया है । सन 46-47 कि आजादी कि आँधी ने मन्नू जी को भी अछूता नही छोड़ा । छोटे शहर कि युवा होती लड़की ने आजादी कि लडाई मे जिस तरह भागीदारी कि उसमे उसका उत्साह, ओज ,संगठन –क्षमता ओर विरोध करने का तरीका देखते ही बनसता हे |

**कक्षा – दस**

**तुलसीदास**

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| **क्रम स .** | **मुख्य बिन्दु** | **व्याखा** |
| 1 | रामचरित मानस के बालकांड से लिया है । | सीता स्वयंवर मे राम द्वारा शिव धनुष भंग के बाद मुनि परशु राम को जब यह समाचार मिला तो वे क्रोधित होकर वहा आते है ।  शिव धनुष को खंडित देखकर वे आपे से बाहर हो जाते है ।  राम के विनय ओर विश्वामित्र के समझाने पर तथा राम की शक्ति की परीक्षा लेकर अंतत उनका गुस्सा शांत होता है।  इस बीच राम ,लक्ष्मण ओर परशु राम के क्रोध भरे व्यंग वचनो से देते हे । इस प्रसंग की विशेषता हे लक्ष्मण की वीर रस से पमी व्यंग्योंक्तिया ओर व्यजना शैली की सरस अभिव्यक्ति । |

**गिरिजाकुमार माथुर**

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| **क्रम स .** | **मुख्य बिन्दु** | **व्याखा** |
| 1 | छाया मत छूना कविता के माध्यम से कवि यह कहना चाहता हे कि जीवन मे सुख ओर दुख दोनों ही उपस्थ्ति है । | विगत सुखो को याद कर वर्तमान के दुख को गहरा करना तर्क संगत नही है । कवि के शब्दो मे इससे दुख दुना होता है । विगत की सुखद काल्पनिकता से चिपके रहकर वर्तमान से पलायन की अपेक्षा कठिन यथार्थ से अपेक्षा रूबरू होना ही जीवन की प्राथमिकता होनी चाहिए । |
| 2 | कविता अतीत की स्मृतियो को भूल वर्तमान का सामना कर भविष्य का वरण करने का संदेश देती । | वह यह बताती हे कि जीवन के सत्य को छोड़कर उसकी छायाओ से भ्रमित रहना जीवन कि कठोर वास्तविकता से दूर रहना है । |

ऋतुराज

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| **क्रम स .** | **मुख्य बिन्दु** | **व्याखा** |
| 1 | कन्याकर दान कविता मे माँ बाप को स्त्री के परंपरागत (आदर्श ) रूप से हट सीख दे रही है । | कवि का मानना है कि समाज व्यवस्था द्वारा स्त्रियों के लिए आचरण संबंधी जो प्रतिमान गढ़ लिए जाते है वे आदर्श के मुलम्मे मे बंधने होते है । |
| 2 | कोमलता के गौरव मे कमजोरी का उफस छिपा रहता है । | लड़की जैसा न दिखाई देने मे इसी आदर्शीकरण का प्रतीकार है । |
| 3. | बेटी माँ के सबसे निकट ओर सुख दुख का साथी है । | इसी कारण इसे अंतिमपूँजी कहा गया है। कविता मे केवल भावुकता ही नही बल्कि माँ के संचित अनुभवों की पीड़ा की प्रमाणिक अभिव्यक्ति है । इस छोटी सी कविता मे स्त्री जीवन के प्रति ऋतुराज जी की गहरी स्वेदनशीलता अभिवयक्ति हुई है । |

मंगलेश डबराल संगतकार

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| **क्रम स .** | **मुख्य बिन्दु** | **व्याखा** |
| 1 | संगतकार कविता मे गायन मे मुख्य गायक का साथ देने वाले संगतकार की भूमिका के महत्व पर विचार करती है । | द्र्श्य माध्यम की प्रस्तुतियो जैसे – नाटक , फिल्म, संगीत न्रत्य के बारे मे तो यह सही है ही, हम समाज ओर इतिहास मे भी ऐसे अनेक प्रसंगो को देख सकते है । जहाँ नायक की सफलता मे अनेक लोगो ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।  कविता हममे यह संवेदनशीलता विकसित करती है कि उनमे से प्रत्येक का अपना अपना महत्व है ओर उनका सामने न आना उनकी कमजोरी नही मानवीयता है ।  संगीत की सूक्ष्म समझ ओर कविता की द्र्श्यात्मक्ता इस कविता को ऐसी गीत देती है मानो हम इसे अपने सामने घटित होता देख रहे हो । |

मन्नू भण्डारी

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| **क्रम स .** | **मुख्य बिन्दु** | **व्याखा** |
| 1 | एक कहानी यह भी के संदर्भ मे सबसे पहले तो हम यह जान ले कि मन्नू भण्डारी ने पारिश्रमिक अर्थ मे कोई सिलसिलेवार आत्मकथा नही लिखी है । | अपने आत्म कथ्य मे उन्होने उन व्यक्तियों ओर घटनाओ के बारे मे लिखा है जो उनके लेखकीय जीवन से जुड़े हुए है। |
| 2. | मन्नू जी के किशोर जीवन से जुड़ी घटनाओ के साथ उनके पिताजी ओर उनकी कॉलेज कि प्राध्यापिका शीला अग्रवाल का व्यक्तित्व विशेष तोर पर उभरकर आया है । | जिन्होने आगे चलकर उनके लेखकिय व्यक्तित्व के उनके निर्माण मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । लेखिका ने यहा बहुत ही खूबसूरती से साधारण लड़को के असाधारण बनने के प्रारम्भिक पड़ावों को प्रकट किया है । सन 46-47 कि आजादी कि आँधी ने मन्नू जी को भी अछूता नही छोड़ा । छोटे शहर कि युवा होती लड़की ने आजादी कि लडाई मे जिस तरह भागीदारी कि उसमे उसका उत्साह, ओज ,संगठन –क्षमता ओर विरोध करने का तरीका देखते ही बनसता हे |

महावीर प्रसाद दिवेदी

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| **क्रम स .** | **मुख्य बिन्दु** | **व्याखा** |
| 1 | आज हमारे समाज मे लड़कियाँ शिक्षा पाने एव कार्यक्षेत्र मे क्षमता दशाने मे लड़को से बिलकुल भी पीछे नही है किन्तु यहा तक पहुचने के लिए अनेक स्त्री पुरुषो ने लंबा संघर्ष किया । | नवजागरण कल के चिंतको ने मात्र स्त्री शिक्षा ही नही बल्कि समाज मे जनतांत्रिक एव वैज्ञानिक चेतना पंत के सम्पूर्ण विकास के लिए अलख जगाया । यह लेख उन सभी पुरातन पंथी विचारो से लोहा लेना हे जो स्त्री शिक्षा को व्यर्थ अथवा समाज के विघटन का कारण मानते हे । इस लेख की दूसरी विशेषता यह हे की इससे परंपरा को ज्यो का त्यो नही स्वीकार गया हे, बल्कि विवेक से फेसला लेकर ग्रहण करने योग्य को लेने की बात की गयी है ओर परंपरा का जो हिस्सा सड़ गल चुका हे ,उसे रूढ़ि मानकर छोड़ देने की । यह विवेकपूर्ण दृष्टि सम्पूर्ण नवजागरण काल की विशेषता है । आज इस निबंध का अनेक दृष्टियों से ऐतिहासिक महत्व है । |

यतीन्द्र मिश्र

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| **क्रम स .** | **मुख्य बिन्दु** | **व्याखा** |
| 1 | नोबतखाने मे इबादत प्रसिद शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ पर रोचक शैली मे लिखा गया व्यक्ति चित्र है । | बिस्मिल्ला खाँ की रुचियो, उनके अन्तर्मन की बुनावट, संगीत की साधना ओर लगन को संवेदनशील भाषा मे व्यक्त किया है । |
| 2 | संगीत एक आराधना है | इसका विधि विधान है इसका शास्त्र है, इस शास्त्र से परिचय आवयस्क है सिर्फ परिचय ही नही उसका अभ्यास जरूरी है ओर अभ्यास के लिए गुरु शिष्य परंपरा जरूरी है, पूर्ण तन्मयता जरूरी है ,धर्ये जरूरी, मंथन जरूरी है वह लगन ओर धर्ये बिस्मिल्ला खाँ मे रहा है । तभी 80 वर्ष की उम्र मे भी उनकी साधना चलती है । इस पाठ मे उसकी कई अंनु गूँजे है जो पाठ बार बार पठने के लिए आंमत्रित करती हे । |

भंदत आनंद कौस्ल्यायन

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| **क्रम स .** | **मुख्य बिन्दु** | **व्याखा** |
| 1 | संस्कृति निबंध हमे सभ्यता ओर संस्कृति से जुड़े अनेक जटिल प्रश्नों से टकराने की प्रेरणा देता है । | सभ्यता ओर संस्कृति किसे कहते हे दोनों एक ही वस्तु है अथवा अलग अलग है । वे सभ्यता को संस्कृति का परिणाम मानते हुए कहते हे कि मानव संस्कृति अविभाज्य वस्तु है । उन्हे संस्कृति का बंटवारा करने वाले लोगो पर आश्चर्य होता है ओर दुख भी । उनकी दृष्टि मे जो मनुष्य के लिए कल्याणकारी नही है , वह न सभ्यता है ओर न संस्कृति । |